श्रद्धेय डा. विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से.....
(श्रीरामशरणम् चंडीगढ़, १५ अगस्त २००३ अपरान्ह ३:३० - ४:३०)

आज भारत का ५७वां स्वतन्त्रता दिवस भी है। इस उपलक्ष्य में आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। एक छोटा सा प्रश्न पूछता हूँ आपसे। भारत तो स्वतन्त्र हो गया, कोई शक नहीं। आज Anniversary मनाई जा रही है। देश में बड़ी धूमधाम से यह दिवस मनाया गया है। क्या आप, स्वयं भी स्वतन्त्र हो गए हो या नहीं ? भारत के स्वतन्त्र होने से हमारा पेट नहीं भरता। वहां जहां जाना है, वहां जाकर, यह प्रश्न नहीं पूछा जाएगा कि आप गुलाम देश से आए हो या स्वतन्त्र देश से आए हो। वहां तो यह देखना है कि आप स्वयं निर्बन्ध होकर आए हो कि नहीं आए। आप स्वयं अपने बन्धन तोड़ कर आए हो कि नहीं आए ? स्वयं मुक्त हो कर आए हो कि नहीं आए। यही प्रश्न मैं इस वक्त आपसे पूछता हूँ। यदि वह बन्धन नहीं टूटा, यदि आप अभी तक स्वाधीन नहीं हुए हैं, तो क्या उसके लिए प्रयत्न कर रहे हो कि नहीं कर रहे ? क्या अभी तक मोक्ष के लिए भारी उत्कण्ठा तड़प हृदय में पैदा हुई कि नहीं हुई? क्या भक्तिमय जीवन व्यतीत करने के लिए, परमात्मा के समर्पित जीवन व्यतीत करने के लिए, अभी हृदय में तड़प उठी है, उत्कण्ठा जागी है कि नहीं जागी। क्या यह जिज्ञासा, आप स्वयं क्या हैं, यह हाड़ मास का पुतला या इससे कुछ ऊपर हैं, इससे कुछ भिन्न हैं। क्या इस जानकारी के लिए दिल में भारी उत्कण्ठा जागी है कि नहीं जागी। यह सब क्यूँ कह रहा हूँ ? इनकी जानकारी के बिना आप निर्बन्ध नहीं हो पाओगे। आप बन्धन से नहीं टूट पाओगे। यह मोह ममता की हथकड़ियां, यह मोह ममता की जो पांव में बेड़ियां पहनी हुई हैं यह कैसे टूटेंगी। यह इनके बिना नहीं टूटेंगी। परमेश्वर की कृपा है। देवियों एवं सज्जनो ! आप के पास तो अमोघ साधन है। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं तारक मंत्र है यह। क्या भव सागर तरने के लिए, अभी उत्कण्ठा आपके हृदय में, तड़प आपके हृदय में जागी है कि नहीं जागी? आपके पास तो मन्त्र है। आप के पास तो अनमोल साधन है, अमोघ साधन हैं। इसमें कोई ऐसा नहीं है कि ऐसा करने से होगा कि नहीं होगा। स्वामी जी महाराज ने इस बात की घोषणा करी हुई है यह तारक मंत्र है, यह पारक मंत्र है, यह तारने वाला मंत्र है, यह पार करने वाला मन्त्र है। इसमें सन्देह की बिलकुल गुंजाइश नहीं है। यदि अभी तक इस दिशा में आप नहीं गए हैं तो कमी हमारे अन्दर है साधक जनों ! आइए देखें, यह कमीयां क्या हैं? जो हमारे अन्दर, यह भारी उत्कण्ठा, यह तड़प उत्पन्न नहीं होने देतीं।

शास्त्र कहता है, ईश्वर प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार, परमशान्ति, परमानन्द की प्राप्ति में मुख्य बाधाँए तीन हैं। आप सब जानते हो। मैं कोई नई बात आपकी सेवा में नहीं कह रहा। शास्त्र सम्मत बातें हैं यह। शास्त्र में वर्णित बातें हैं यह। Technical Terms इनके लिए इस्तेमाल की जाती हैं। मल, विक्षेप एवं आवरण। आप सब यदि नाम भूल गए हैं तो मेरा काम ही आपको याद दिलाते रहना है। यह तीन नाम मैं पुनः आपको याद दिलाता हूँ। मल, विक्षेप और आवरण। यह तीन ही कारण हैं जो हमें परमात्मा की ओर नहीं मुड़ने देते। यह हमारे अन्दर जो तड़प है, व्याकुलता है, वह, पैदा नहीं होने देते। माताओं एवं सज्जनों ! यह मैं कोरे कागज़ पर लिख कर देता हूँ। जब तक व्याकुलता, जब तक यह तड़प हृदय में पैदा नहीं होगी, तब तक आप मोक्ष के अधिकारी, तब तक आप परमात्मा के प्यार के अधिकारी, बिल्कुल तहीं बन पाओगे। यह तड़प जागनी चाहिए। राम नाम जब जगे अभंग, चेतन भाव जगे सुख संग। यह जब तक जागृत नहीं होता, यह मंत्र राम नाम तब तक आप क्या हो, आप इसे समझ नहीं पाओगे। तब तक यह बन्धन जो है, यह हथकड़ियां जो लगी हैं, यह पांव को जो बेड़ीयां पड़ी हैं, यह टूटने वाली नहीं हैं। फिर बाबा नानक कहते हैं 'गुरू बन्धन काटे' ! वह भी परमेश्वर की कृपा है कि हमारे गुरूजन, हमारी यह सेवा भी करने के लिए तैयार हैं। आप बन्धन कटवाने वाले तो बनो। कम से कम हृदय से उनसे प्रार्थना तो करो। कम से कम हृदय तड़पे तो, व्याकुलता तो हो कि जिस काम के लिए हमें जन्म मिला है, हे गुरूजनो! कृपा करो हमारा जन्म सफल हो।

तीन शब्द आपके सामने कहे हैं मल, विक्षेप एवं आवरण। स्वामी जी महाराज ने इन तीनों शब्दों को बहुत सरल ढंग से समझाया है। अब, अभी नहीं, जब कभी आर्य समाज में थे स्वामी जी महाराज। तब उन्होंने एक पुस्तक लिखी और उसमें मल, विक्षेप एवं आवरण का बहुत सुन्दर, बडे सरल ढंग से उन्होंने बखान

किया। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, एक सरोवर (तालाब) है। उसमें जल निर्मल है। तालाब के नीचे तो कीचड़ होता है पर इस वक्त जल निर्मल है। आकाश भी निर्मल है। सूर्य चमक रहा है तो उसमें सूर्य का प्रतिबिम्ब जो है जल में बहुत अच्छी तरह से आपको दिखाई दे जाता है। यदि आप उस जल को हिला देते हो, पानी मिट्टी जैसा हो जाता है कीचड़ उसमें आ जाता है, मिट्टी MIX हो जाती है पानी धुँधला हो जाता है। आकाश तो निर्मल है, सूर्य भी चमक रहा है लेकिन आप उस में सूर्य का प्रतिबिम्ब नहीं देख पाओगे। स्वामी जी महाराज इसे कहते हैं मल। मन मलिन है, मन धुंधला है। यह शीशा जो है, इसके ऊपर धुन्ध आ गई है इसलिए आपको अपनी सूरत जो है या परमात्मा की जो सूरत है, भीतर विराजमान परमात्मा जो है वे बिल्कुल प्रतिबिम्बित नहीं हो रहे। स्वामी जी महाराज कहते हैं पानी भी निर्मल है, आकाश भी निर्मल है सूर्य भी चमक रहा है लेकिन यदि आप पत्थर मार कर पानी को हिला देते है तो भी प्रतिबिम्ब जो है, वह दिखाई नहीं देगा। स्वामी जी महाराज कहते है यह विक्षेप है, चंचलता, जिससे हम सब suffer करते हैं। मन की यह चंचलता ही तो है जो हमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देने देती। क्या कर दिया आपने? पानी में पत्थर मारा, लहरें उठीं, पानी इधर उधर हिल गया। अब प्रतिबिम्ब यदि दिखाई भी देता है, तो हिलता हुआ दिखाई देता है। आप नहीं बता सकते यह किसका प्रतिबिम्ब है।

आवारण क्या है ? स्वामी जी महाराज फरमाते हैं पानी तो बिलकुल निर्मल है लेकिन सुर्य और पानी के बीच में बादल आ गए हैं। देखो, आज सूर्य दिखाई नहीं दे रहा। क्यूँ ? सूर्य और पानी के बीच में आवरण आ गया है परदा आ गया है बादलों का। स्वामी जी महाराज कहते हैं यह आवरण है। तब भी आपको प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देने वाला। क्यूँ ? ऐसा नहीं है कि सूर्य ने चमकना बन्द कर दिया हुआ है। वह कभी चमकना बन्द नहीं करता । कहीं न कहीं, हर वक्त चमकता रहता है। इस वक्त भी चमक रहा है लेकिन हमें दिखाई नहीं दे रहा। क्यूँ ? बीच में बादल आ गए हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं यह आवरण है।

बहुत साधारण ढंग से, बड़े सरल ढंग से, स्वामी जी महाराज ने इन तीनों को समझा दिया। मन की मलिनता, मलिन मन, तब भी आपके हृदय में परमात्मा के मिलन की तड़प नहीं जग सकेगी। यदि चंचल मन है, भटकने वाला मन है, आज यहाँ, कल वहाँ यह भटकने वाला मन। साधक जनों ! थोड़ा इस का स्पष्टीकरण करता हूँ।

किस का मन भटकता है ? हम सब का । क्यूँ ? किसी न किसी कामना को लिए बैठे हुए हैं हम। आप सच मानो, एक ही शब्द पर्याप्त है, जो हमारे मन को भी मलिन कर देती है, कामना। जो हमारे मन को चंचल कर देती है कामना और हमारे बीच आवरण परदा ला देती है वह भी कामना। तीसरे अध्याय में आपने पढ़ा है अर्जुन को कहते हैं। अर्जुन यह कामरूपी शत्रु को हनन कर। क्यूँ यही है जो हमारे विवेक को हमारे ज्ञान को ढक देता है।

मानो, एक ही ऐसी चीज़, जो इन तीनों का कारण है, कामना।

आज मेरी माताओं और सज्जनो इसी कामना की चर्चा आपकी सेवा में करते है। यह कामना क्या है ? मत सोचो बड़ी-बडी चीजों की कामना करना ही कामना है। घर मे रहते हुए आप यह चाहते हो कि मेरी चले, सब मेरा कहना मानें, सब मेरे मन के अनुसार चलें, जब मैं चाहूँ यह मुझे मिले, जब मैं न चाहूँ मुझे न मिले। मेरे बिल्कुल अनुकूल चलें। मेरे बिल्कुल अनूसार चलें। यह सब कामना ही है।

जहाँ शब्द चाहिए आ गया, समझ लीजिएगा, वहाँ भौतिक कामना काम कर रही है। यह नहीं चाहिए, वहाँ भी कामना है। क्यूँ ? चाहिए तो वहाँ भी आ गया। नहीं है, पर चाहिए तो लग गया न। जहाँ चाहिए लग गया, वहाँ चाह आ गई, वहाँ कामना आ गई। कामना युक्त व्यक्ति को सकामी कहा जाता है।

ऐसी भक्ति को भी, ऐसे भक्त को भी, भगवान् सकामी भक्त कहते है। भक्त ही कहते हैं लेकिन सकामी भक्त। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो अगले जन्म में, उससे अगले जन्म में निष्कामी बनेगा। कुछ प्रेम जी महराज को करो याद। जिन्होंने उनके प्रवचत सुने हुए हैं, दो बातों पर हमेशा बल दिया करते निष्काम सेवा एवं निष्काम भक्ति। दोनों के साथ निष्कामता जुडी हुई है किसी के साथ सकामता नहीं, कामना रहित। कामना करने से कामना तो पूरी हो जाएगी लेकिन आप परमात्मा से वंचित रह जाओगे। देखो, कितना अन्तर है सकामी और निष्कामी में। एक राजा के पास दो महिलाएं हैं। एक तनख़ाह लेकर काम करती है। एक बिना तनख़ाह के काम करती है। एक को नौकरानी कहा जाता है, दूसरी को रानी कहा जाता है वा महारानी कहा जाता है। नौकरानी का उतना ही अधिकार है, जितनी तनख़ाह मिलेगी। इतना ही अधिकार है। और महारानी को सब कुछ का अधिकार है। राजा के पास जो कुछ है सब कुछ का अधिकार उस रानी को। क्यूँ ? एक सकामी है दूसरी निष्कामी है। एक तनख़ाह लेकर काम कर रही है, मज़दूरी कर रही है, जैसे हम सब कर रहे है। परमात्मा के साथ देवियों सज्जनों व्यापार न करो। भक्ति करो परमात्मा की, परमात्मा के साथ मज़दूरी न करो। जिसकी भक्ति करी जाती है उसे भगवान् कहा जाता है। परमात्मा की, भगवान् की भक्ति करनी है, उसके साथ व्यापार नहीं करना है। यह हमारा स्वभाव बन गया हुआ है कि हम संसार के साथ भी व्यापार करते हैं और परमात्मा के साथ भी व्यापार ही करना चाहते हैं। कितनी खतरनाक है यह कामना।

कबीर साहब को किसी ने प्रश्न कर दिया आप भी राम नाम जपते हो, हम भी राम नाम जपते हैं। आप कितने शान्त हो ? आपके राम ने आप ही को नहीं तारा अनेक और भी तर गए और हम अभी स्वयं ही डूबे हुए हैं। राम राम तो हम भी जपते हैं। क्या आपके राम में और मेरे राम में अन्तर है ? कबीर साहब कहते हैं नहीं भाई! राम तो एक ही है, जो नाम आप जपते हो मैं भी वही नाम जपता हूँ लेकिन अन्तर है। दृष्टान्त देते हैं कबीर जी महाराज।

कहते हैं भाई खेत लह लहा रहा है। परमेश्वर की कृपा है, खेती अच्छी तरह से तैयार करी। अच्छा बीज बोया। पानी दिया, खाद दी। खेती लहलहाने लग गई। किसान की बदकिस्मती देखो। उसके बाद उसी अपने लहलहाते खेत में जब कामना रूपी पशु छोड देते हैं तो हमारे हाथ कुछ नहीं लगता। हम बिल्कुल खाली के खाली रह जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं भाई! इतना ही अन्तर है।

कामना और आवश्यकता में भेद रखो। आवश्यकता तो पूरी करनी ही है। आवश्यकता की तो सीमा है लेकिन कामना की कोई सीमा नहीं। जो सदा अतृप्त रहती है उसे ही तो कामना कहा जाता है।

दस साल के बाद, एक पुत्री धर में पैदा हो गई एक कामना आप की पुरी हो गई। चाहिए तो पुत्र था। साथ ही साथ एक और बड़ी कामना जाग गई। इस निष्काम पर एक छोटा सा दृष्टान्त आपकी सेवा में रखता हूँ और इसी प्रार्थना के साथ, नाम जपो मत मांगो परमात्मा से कुछ।

कम से कम भौतिक चीज़ कुछ नहीं मांगो। भक्ति मांगो, परमात्मा की कृपा मांगो समर्पण मांगो। यह सब चीजें मांगने वाली है। वह मोक्ष का दाता है। वह उससे मांगो। भौतिक चीजें यानी कूड़ा कर्कट और कोयला क्यूँ मांगते हो इससे तो मुँह काला होगा। अपना मुँह गन्दा होगा, और कुछ नहीं। निष्कामता के उपर देवियों और सज्जनों ! मुझे एक दृष्टान्त बहुत अच्छा लगता है वह आपकी सेवा में है।

भगवान की बांसुरी है मुरली। गोपियों को आज माता मुरली से ईर्ष्या हो गई। उसे चुरा लिया। भगवान विश्राम कर रहे थे। मुरली पास रखी हुई थी। मौका ढूंढ कर किसी गोपी ने मुरली को चुरा लिया और चुरा कर उस से प्रश्न करती है 'सखी एक बात बता। तू जंगल के निकृष्ट पेड़ जिसे बांस कहा जाता है, उससे बनी हुई है। मानो तेरी जाति अच्छी नहीं, तेरा कुल अच्छा नहीं। अनेक सारी गांठें हैं तेरे अन्दर। मानो तू ज्ञानी भी नहीं है। तेरे अन्दर कोई ज्ञान नहीं है। गांठें शायद कम हैं लेकिन छिद्र ज्यादा हैं। मानो

तेरे अन्दर, कोई गुण, कोई योग्यता दिखाई नहीं देती। मुंह भी तेरा जला हुआ है। हमें न तेरा कुल अच्छा लगता है, न तेरी जाति अच्छी लगती है। न तेरे अन्दर कोई योग्यता है। न कोई गुण दिखाई देता है। न तेरे अन्दर कोई ज्ञान की किरण दिखाई देती है। फिर क्या बात है कि श्याम सुन्दर तुम्हें इतना प्यार करते हैं कि तुम्हें हर वक्त अपने हृदय से लगा कर रखते हैं। हमने तो सुना है, तेरे सिवा और किसी को अपना अधरामृत नहीं पिलाने। यह तुझे ही गौरव प्राप्त है कि अपना अमृत होंठों का अमृत जो है वे तुझे ही पिलाते हैं। होठों के साथ तुझे ही लगाते हैं और किसी को नहीं लगाते और हमने सुना है कि रात को सोते वक्त भी तुम्हें अपने Bed (बिस्तर) पर ही रखते हैं। क्या कारण है ?'

मुरली माता बहुत सुन्दर उत्तर देती है, 'सखियों जो तुम कह रही को बिलकुल ठीक है। मेरा कुल अच्छा नहीं। मेरी जाती भी अच्छी नहीं। मेरे अन्दर कोई गुण नहीं। छल छिद्र से भरी पड़ी हूँ मैं। मेरे अन्दर किसी प्रकार की योग्यता नहीं। और तो और मेरे अन्दर भक्ति का रस भी नहीं। सूखी, बिलकुल रस हीन। अज्ञानता, अविद्या, की अनेक सारी गांठे मेरे अन्दर हैं पर एक बात आप लोगों ने देखी सखियों'! 'क्या है वह ? '

'मैं भीतर से खाली हूँ। मेरे अन्दर कोई अपनी कामना नहीं है। यही कारण मुझे दिखई देता है कि श्याम सुन्दर मुझे इतना प्रेम करते हैं। मेरे अन्दर कोई अपनी कामना नहीं है। मैं अपने आप तो बोल भी नहीं सकती। जब वे मेरे अन्दर प्राण फूकते हैं तो मेरी आवाज़ निकलती है। वे उठाते हैं तो मैं उठती हूँ। मैं तो अपने आप उठ भी नहीं सकती। आप के अन्दर योग्यता है, आपके अन्दर प्रेम है। आपके अन्दर यह है, आपके अन्दर वो है। मेरे अन्दर तो कुछ भी नहीं है। हाँ, मेरा भीतर जो है, वह खाली है।

साधक जनों राम नाम के प्रताप से अपने भीतर को करो खाली। कामना शून्य करो अपना भीतर। फिर देखो अन्दर राम बोलता है कि नहीं बोलता। तब काम नहीं बोलेगा। काम अर्थात् कामना, यह तो नाच नचाती है। तब कामना नहीं बोलेगी तब राम बोलेगा काम नहीं बोलेगा।

जैसे जैसे अपने आपको कामना शून्य करोगे शून्य अर्थात Zero। एक ज़ीरो यदि भीतर हुआ और भगवान् उसके साथ जुड गए तो कीमत आपकी दस गुणा। दो शून्य हो गए, दो ज़ीरो, तो कीमत आपकी सौ गुणा। तीन शुन्य हो गए तो कीमत आपकी हज़ार गुणा। जैसे जैसे शून्य बढ़ते जाएँगे तैसे तैसे आपकी कीमत बढ़ती जाएगी। अपनी कीमत बढ़ाना चाहते हो, परमेश्वर की कृपा के पात्र बनना चाहते हो तो अपने आपको, जितना शून्य कर सकते हो करो। अति शुभ कामनाएं। परमेश्वर की कृपा सब पर बनी रहे। मेरे गुरूजनो का उपकार, उनकी कृपा, उनकी दया, उनके आशीर्वाद, सब को मिलते रहें। सब सुखी रहें। परमेश्वर की अपार कृपा।

सब परमेश्वर की कृपा है। सब मेरे बाबा का प्रताप है। मेरे गुरूजनों का प्रताप है। सच मानो, असली मेहनत तो उनकी है। इतनी सी बाम याद रखो कि उनकी कमाई खा रहे हैं, अपना कुछ नहीं है, तो यह सब से बड़ी निष्कामता है। हार्दिक धन्यवाद। पुनः सब को प्रणाम्।